

रविवार 29 जून, 2025

विषय — क्रिश्चियन साइंस

स्वर्ण पाठ: प्रकाशित वाक्य 10 : 8

"जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले।"

उत्तरदायी अध्ययन: प्रकाशित वाक्य 10 : 1-4, 9-11

- ¹ फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेघधनुष था: और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खंभे के से थे।
- ² और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी; उस ने अपना दाहिना पांव समुद्र पर, और बायां पृथ्वी पर रखा।
- ³ और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है।
- ⁴ और जब सातों गर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर था, और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि जो बातें गर्जन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें गुप्त रख, और मत लिख।
- ⁹ और मैं ने स्वर्गदूत के पास जा कर कहा, यह छोटी पुस्तक मुझे दे; और उस ने मुझ से कहा ले इसे खा ले, और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी।
- ¹⁰ सो मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से ले कर खा गया, वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया।
- ¹¹ तब मुझ से यह कहा गया, कि तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर, फिर भविष्यद्वक्ता करनी होगी॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 15 : 26 (मैं हूँ)

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

26 मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूँ॥

2. भजन संहिता 103 : 1-5

- 1 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- 2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- 3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
- 4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है,
- 5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाई नई हो जाती है॥

3. मरकुस 1 : 9 (यीशु)-11, 29-34 (से;), 40-42

- 9 उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
- 10 और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उस ने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाई अपने ऊपर उतरते देखा।
- 11 और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ॥
- 29 और वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्ध्रियास के घर आया।
- 30 और शमौन की सास ज्वर से पीडित थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उस से कहा।
- 31 तब उस ने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और वह उन की सेवा-टहल करने लगी॥
- 32 सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए।
- 33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ।
- 34 और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं॥
- 40 और एक कोढ़ी ने उसके पास आकर, उस से बिनती की, और उसके साम्हने घुटने टेककर, उस से कहा; यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
- 41 उस ने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा; मैं चाहता हूँ तू शुद्ध हो जा।

42 और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।

4. यूहन्ना 13 : 1, 31-35

- 1 फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।
- 31 जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा; अब मनुष्य पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उस में हुई।
- 32 और परमेश्वर भी अपने में उस की महिमा करेगा, वरन तुरन्त करेगा।
- 33 हे बाल को, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं: फिर तुम मुझे ढूंढोगे, और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूं।
- 34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो।
- 35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चले हो॥

5. यूहन्ना 14 : 5, 6, 15-17

- 5 थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?
- 6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।
- 15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
- 16 और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
- 17 अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

6. भजन संहिता 91 : 1-12, 14-16

- 1 जोपरमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
- 2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।
- 3 वह तो तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा।

- 4 वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके पैरों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।
- 5 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,
- 6 न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है॥
- 7 तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा।
- 8 परन्तु तू अपनी आंखों की दृष्टि करेगा और दुष्टों के अन्त को देखेगा॥
- 9 हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
- 10 इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा॥
- 11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।
- 12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
- 14 उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।
- 15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।
- 16 मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 136 : 1-8

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है। अपने ऊपर आए उत्पीड़न के बावजूद, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से पुरुषों को बचाने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल किया।

2. 147 : 24-29

हमारे मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, ईसाई उपचार का अभ्यास किया, और अपने छात्रों को इसके दिव्य सिद्धांत की सामान्यताओं को सिखाया; लेकिन उन्होंने बीमारी को ठीक करने और रोकने के इस सिद्धांत को प्रदर्शित करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं छोड़ा। ईसाई विज्ञान में इस नियम की खोज की जानी बाकी थी।

3. 107 : 1-6

वर्ष 1866 में, मैं ने जीवन, सत्य और प्रेम के क्रिएचरियन साइंस या ईश्वरीय नियमों की खोज की और अपनी खोज का नाम क्रिश्चियन साइंस रखा। वैज्ञानिक मानसिक उपचार के पूर्ण दिव्य सिद्धांत के इस अंतिम रहस्योद्घाटन के स्वागत के लिए भगवान ने कई वर्षों के दौरान मुझे विनम्रतापूर्वक तैयार किया।

4. 109 : 11-24

अपनी खोज के तीन साल बाद, मैंने माइंड-हीलिंग की इस समस्या का समाधान खोजा, शास्त्रों की खोज की और थोड़ा और पढ़ा, समाज से अलग रखा और एक सकारात्मक नियम की खोज के लिए समय और ऊर्जा समर्पित की। ... यह खोज मधुर, शांत और आशा से भरी हुई थी, स्वार्थपूर्ण या निराशाजनक नहीं थी। मैं जानता था कि सभी सामंजस्यपूर्ण माइंड-एक्शन का सिद्धांत ईश्वर है, और यह कि पवित्र, उत्थान विश्वास द्वारा आदिम ईसाई उपचार में उत्पन्न हुए थे; लेकिन मुझे इस उपचार के विज्ञान का पता होना चाहिए, और मैंने दिव्य रहस्योद्घाटन, कारण और प्रदर्शन के

5. 128 : 4-19

विज्ञान शब्द, ठीक से समझे जाने पर, केवल ईश्वर के नियमों और ब्रह्मांड पर उसकी सरकार को संदर्भित करता है, जिसमें मनुष्य भी शामिल है। इससे यह प्रतीत होता है कि व्यापारिक पुरुषों और सुसंस्कृत विद्वानों ने पाया है कि क्रिएस्टियन साइंस उनकी सहनशक्ति और मानसिक शक्तियों को बढ़ाता है, चरित्र की उनकी धारणा को बढ़ाता है, उन्हें एकरूपता और समझ देता है और उनकी साधारण क्षमता को पार करने की क्षमता देता है। मानव मन, जो इस आध्यात्मिक समझ के साथ जुड़ा हुआ है, अधिक लोचदार हो जाता है, अधिक धीरज रखने में सक्षम होता है, कुछ हद तक खुद से बच जाता है, और कम प्रतिनिधि की आवश्यकता होती है। मनुष्य के अव्यक्त क्षमताओं और संभावनाओं को विकसित करने के विज्ञान का ज्ञान। यह विचार के वातावरण का विस्तार करता है, जिससे नश्वर व्यापक और उच्चतर क्षेत्रों तक पहुँच प्राप्त करता है। यह विचारक को अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण की अपनी मूल हवा में उठाता है।

6. 1:1-4

पापी को सुधारने और बीमार को ठीक करने वाली प्रार्थना एक पूर्ण विश्वास है कि भगवान के लिए सभी चीजें संभव हैं, - एक आध्यात्मिक समझ, एक निःस्वार्थ प्रेम। इस विषय

7. 342 : 21-28

क्रायश्चियन साइंस पापी व्यक्ति को जगाता है, काफिरों की याद दिलाता है, और असहाय अमान्य आदमी को दर्द के सोफे से उठाता है। यह गूंगे को सत्य के शब्द बोलते हैं, और वे आनन्द के साथ उत्तर देते हैं। यह बहरे को सुनने के लिए, लंगड़े के लिए चलने के लिए और अंधे को देखने का कारण बनता है।

8. 482 : 27 (क्रिश्चियन)-31

क्रिश्चियन साइंस सत्य का नियम है, जो एक मन या ईश्वर के आधार पर बीमारों को ठीक करता है। यह किसी अन्य तरीके से उपचार नहीं कर सकता, क्योंकि मानव, तथाकथित नश्वर मन उपचारक नहीं है, बल्कि रोग में विश्वास पैदा करता है।

9. 7 : 27-4

जब से लेखिका ने रोग और पाप दोनों के उपचार में सत्य की शक्ति की खोज की है, तब से उसकी प्रणाली का पूरी तरह से परीक्षण किया गया है और उसे कम नहीं पाया गया है; लेकिन ईसाई विज्ञान की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए, मनुष्य को इसके दिव्य सिद्धांत का पालन करते

10. 483 : 13-5

लेखिका की पवित्र खोज के बाद, उन्होंने ईसाई धर्म को "साइंस" नाम दिया, भौतिक इंद्रियों को "त्रुटि" नाम दिया, और मन को "पदार्थ" नाम दिया। विज्ञान ने विश्व को इस मुद्दे पर संघर्ष करने के लिए बुलाया है और इसका प्रदर्शन, जो बीमारों को ठीक करता है, त्रुटि को नष्ट करता है, तथा सार्वभौमिक सद्भाव को प्रकट करता है। उन स्वाभाविक क्रिश्चियन वैज्ञानिकों, प्राचीन महानुभावों और मसीह यीशु के लिए, परमेश्वर ने निश्चित रूप से क्रिश्चियन विज्ञान की भावना को प्रकट किया, भले ही पूर्ण अक्षर नहीं।

क्योंकि मन का विज्ञान उन सामान्य वैज्ञानिक विद्यालयों को अपमानित करता प्रतीत होता है, जो केवल भौतिक अवलोकनों से ही जूझते हैं, इस विज्ञान को विरोध का सामना करना पड़ा है; लेकिन यदि कोई प्रणाली ईश्वर का सम्मान करती है, तो उसे सभी विचारशील व्यक्तियों से समर्थन मिलना चाहिए, विरोध नहीं। और क्रिश्चियन साइंस ईश्वर को उस तरह सम्मान देता है जैसा कोई अन्य सिद्धांत नहीं देता, और यह ईश्वरीय नाम और प्रकृति के माध्यम से कई अद्भुत कार्यों को करने के द्वारा, उसकी नियुक्ति के तरीके से ऐसा करता है। किसी को भी अपने मिशन को बिना किसी डर या छल के पूरा करना चाहिए, क्योंकि अच्छे से काम करने के लिए, काम को निःस्वार्थ भाव से किया जाना चाहिए। ईसाई धर्म कभी भी किसी दैवी सिद्धांत पर आधारित नहीं होगा और इसलिए इसे तब तक अचूक नहीं माना जाएगा, जब तक कि इसके पूर्ण विज्ञान तक नहीं पहुँच जाते। जब यह पूरा हो जाता है, तो न तो

घमंड, न ही पूर्वाग्रह, न ही कट्टरता, न ही ईर्ष्या इसकी नींव को धो सकती है, क्योंकि यह चट्टान, मसीह पर बनाया गया है।

11. 55 : 15-29

अपने स्वयं के पंखों के नीचे बीमार और पापी लोगों को इकट्ठा करके, सत्य का अमर विचार सदियों से चल रहा है। मेरी थकी हुई आशा उस सुखद दिन को महसूस करने की कोशिश करती है, जब मनुष्य मसीह के विज्ञान को पहचान लेगा और अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करेगा, — जब वह ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उस परमात्मा की उपचार शक्ति का एहसास करेगा जो उसने किया है और मानव जाति के लिए कर रहा है। वादे पूरे होंगे। दिव्य चिकित्सा के प्रकट होने का समय हर समय है; और जो कोई भी दिव्य विज्ञान की वेदी पर अपने सांसारिक स्तर को रखता है, अब मसीह के प्याले को पीता है, और वह ईसाई उपचार की भावना और शक्ति से संपन्न है।

संत उहन्ना के शब्दों में: "वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।" इस कम्फ़र्ट को मैं ईश्वरीय विज्ञान समझता हूँ।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6